सम–सीमान्त तुष्टिगुण का नियम
(Law of Equi-Marginal Utility)

Dr. M.P. Mathur
Directorate of Distance Education
Kurukshetra University,
Kurukshetra

DDE

Programme

Class:
B.A. I

Subject:
Economics

Lesson: 4

सम-सीमान्त तुष्टिगुण का नियम
(Law of Equi-Marginal Utility)

- **भूमिका (Introduction)**

उपभोक्ता की आय सीमित है, परन्तु उसकी आवश्यकताएं असीमित है। वह अपनी सम्पूर्ण आवश्यकताओं को तो पूरा नहीं कर सकता, इसलिए वह इतना अवश्य ही चाहेगा कि जितनी भी उसकी आय हो, उसका अधिक से अधिक लाभ हो। इस सम्बन्ध में उपभोक्ता के सामने यह प्रश्न उठता है कि वह अपनी भौतिक आय का विभिन्न वस्तुओं पर किस प्रकार वितरण करे। इस प्रश्न का उतर हमें सम-सीमान्त तुष्टिगुण के नियम में मिलता है। यह नियम बतलाता है कि अधिकतम सन्तुष्टि प्राप्त करने के लिए उपभोक्ता को विभिन्न वस्तुओं पर अपनी आय का वितरण इस प्रकार करना चाहिए कि प्रत्येक वस्तु पर व्यय की गई मुद्रा की अन्तिम इकाई से उपयोगिता समान हो। इस नियम को गौसन का द्वितीय उपभोग नियम (Gossen's Second Law of Consumption) भी कहा जाता है, क्योंकि सर्वप्रथम उन्होंने ही इसका उल्लेख किया था डॉ. मार्शल ने इस नियम को सम-सीमान्त उपयोगिता का नियम का नाम दिया और तत्पश्चात् विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने इसे विभिन्न नामों से पुकारा है।

❖ नियम के विभिन्न नाम (Various Names of the Law)

- इस नियम का पालन करने से उपभोक्ता अपनी आय से अधितकम सन्तुष्टि प्राप्त कर सकता है, अत: इसे अधिकतम सन्तुष्टि का नियम (Law of Maximum Satisfaction) कहा गया है।
- इस नियम को प्रतिस्थापन का नियम (Law of Substitution) भी कहते है। यह इसलिए कि उपभोक्ता अपनी आय से अधितकम सन्तुष्टि प्राप्त करने के लिए कम-सीमान्त उपयोगिता वाली वस्तुओं का अधिक सीमान्त उपयोगिता वाली वस्तुओं से प्रतिस्थापन करता है।
- इस नियम को उचित व्यय का नियम (Law of Economy of Expenditure) भी कहते है क्योंकि उपभोक्ता अपनी आय का उचित रीति से व्यय कर सकता है।
- इस नियम को विवेकशील उपभोक्ता का नियम (Law of Rational Consumer) भी कहते है।
- इस नियम के व्यापक महत्व के कारण प्रो. रोबिन्स ने इस नियम को अर्थशास्त्र का नियम (Law of Economics) भी कहा है।

❖ नियम की परिभाषा (Defination of Law)

- यदि किसी भी व्यक्ति के पास कोई ऐसी वस्तु है, जिनके अनेक प्रयोग हों, तो वह उस वस्तु को इन अनेक प्रयोगों में इस प्रकार बांटेगा कि इसकी सीमान्त उपयोगिता प्रत्येक प्रयोग में समान हो। – प्रो. मार्शल

- एक गृहस्थ अपनी सन्तुष्टि अधिकतम करने के लिए विभिन्न वस्तुओं पर व्यय की जाने वाली राशि का विभाजनर इस प्रकार करेगा कि प्रत्येक वस्तु पर व्यय किए जाने वाली मुद्रा की अन्तिम इकाई से समान उपयोगिता प्राप्त हो। – प्रो. रिचर्ड जी. लिप्सी

- एक उपभोक्ता उस समय अधिकतम सन्तुष्टि प्राप्त करता है, जब सब वस्तुओं की सीमान्त उपयोगिताओं (तुष्टिगुण) तथा उनकी कीमतों का अनुपात बराबर होता है। – प्रो. सैम्युअलसन

❖ नियम की मान्यताएं (Assemptions of Law)

- वस्तु से प्राप्त उपयोगिता को गणनावाचक संख्याओं जैसे 1,2,3,4..... इत्यादि संख्याओं में मापा जा सकता है।
- उपभोक्ता विवेकशील है अर्थात वह अपनी आय से अधिकतम सन्तुष्टि प्राप्त करना चाहता है।
- उपभोक्ता को एक निश्चित आय का व्यय करना होता है।
- मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता स्थिर रहती है।
- उपभोक्ता की रूचि तथा फैशन आदि में कोई परिवर्तन नहीं होता।
- वस्तु को छोटी इकाईयों में विभाजित किया जा सकता है।
- उपभोक्ता को विभिन्न वस्तुओं से मिलने वाली उपयोगिता का पूरा-पूरा ज्ञान होता है।
- घटती सीमान्त उपयोगिता का नियम लागू होता है।

❖ नियम की व्याख्या (Explanation of Law)

यह नियम, आय के व्यय से अधिकतम सन्तुष्टि प्राप्त करने में उपभोक्ता का मार्ग दर्शन करता है। इस नियम की व्याख्या एक उदाहरण द्वारा की जा सकती है। मान लीजिए उपभोक्ता की सीमित आय पांच रूपए है। इस सीमित आय को वह दो वस्तुओं X और Y पर इस प्रकार खर्च करना चाहता है ताकि उसको अधिकतम सन्तुष्टि प्राप्त हो सके। इसकी व्याख्या निम्नलिखित तालिका द्वारा की जा सकती है।

तालिका सम–सीमान्त उपयोगिता का नियम (Law of Equi-Marginal Utility)

मुद्रा की इकाईया	वस्तु X की सीमान्त उपयोगिता		वस्तु X की सीमान्त उपयोगिता	
पहली इकाई	24		20	
दूएरी इकाई	20	60	16	36
तीसरी इकाई	16		12	
चौथी इकाई	12		8	
पांचवी इकाई	8		4	

इस नियम को रेखाचित्र से भी दर्शाया गया है:

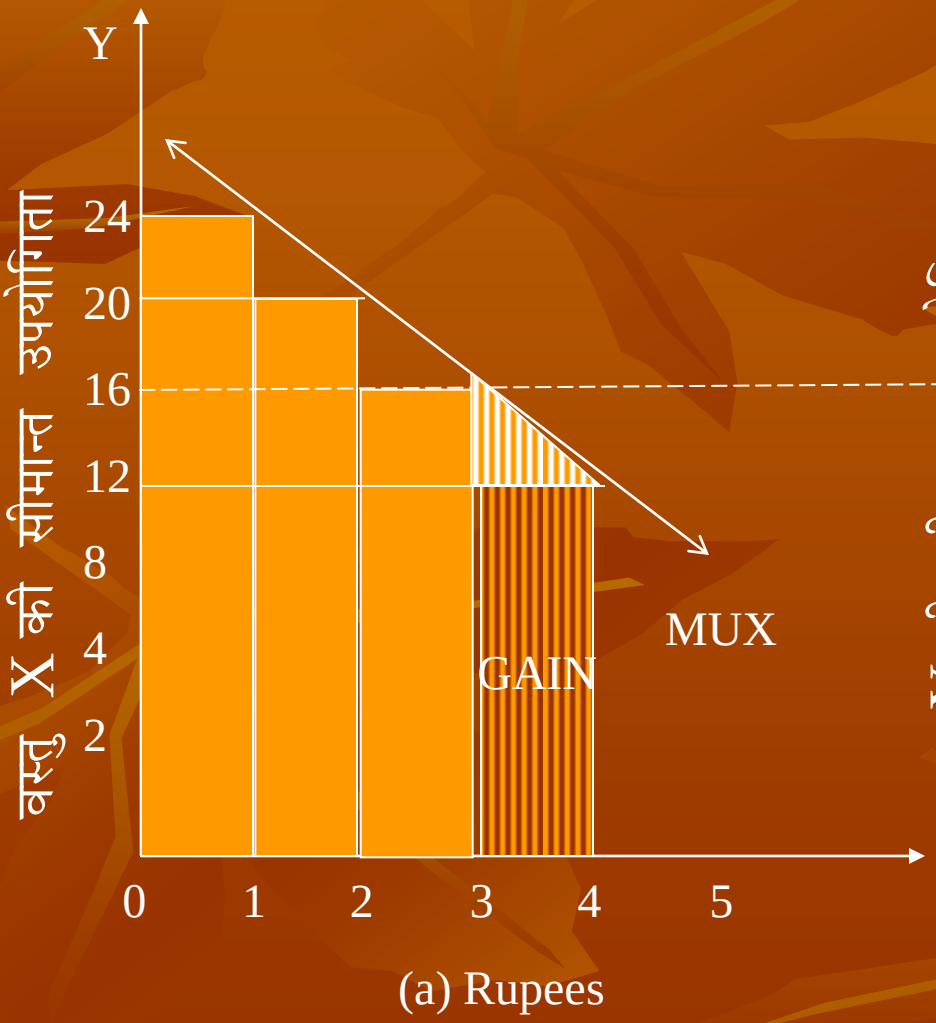

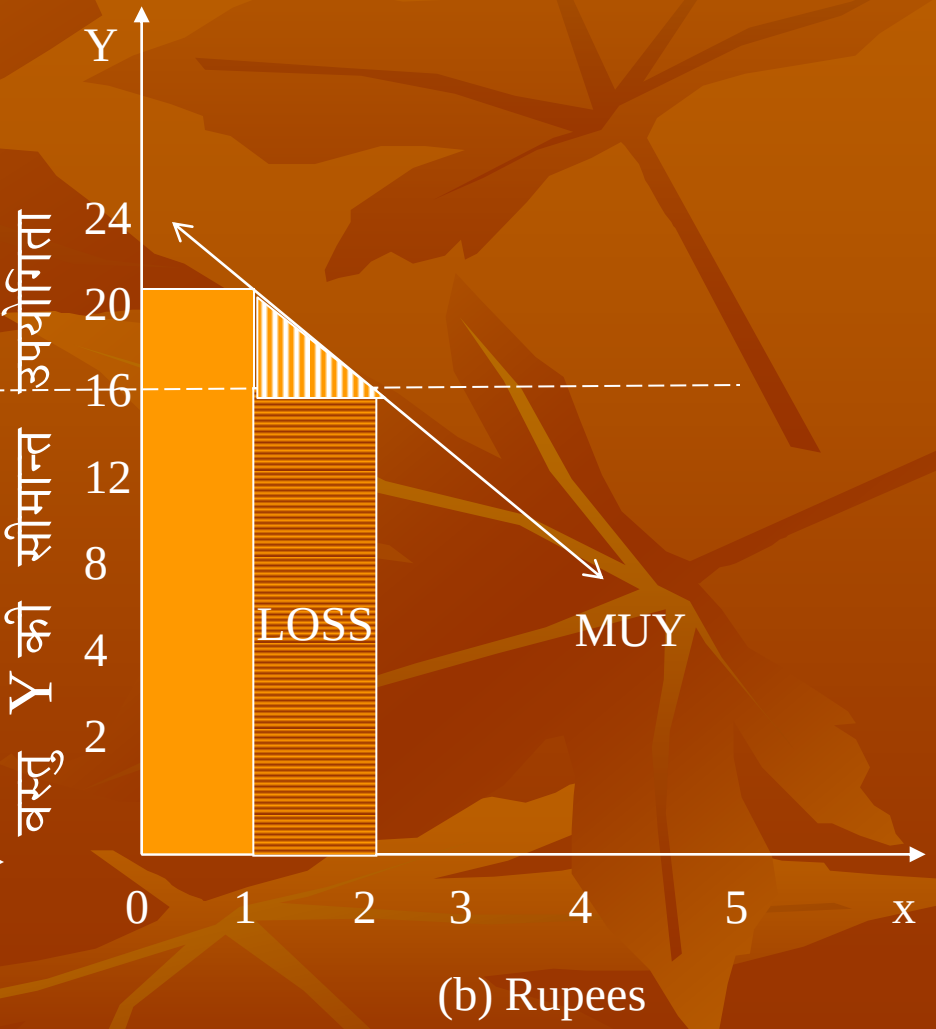

नियम की आधुनिक व्याख्या (Modern Version of the Law)

आधुनिक अर्थशास्त्रियों ने इस नियम की व्याख्या एक नए ढंग से की है, जिसके आधार पर इसे आनुपातिकता का नियम कहा जाता है। इस व्याख्या के अनुसार उपभोक्ता को अधिकतम सन्तुष्टि तब प्राप्त होती है जब वह अपनी आय को विभिन्न वस्तुओं पर इस प्रकार खर्च करे, कि विभिन्न वसतुओं से प्राप्त सीमान्त उपयोगिताओं तथा उनकी कीमतों के अनुपात में समानता हों।

$$\text{मौद्रिक व्यय की सीमान्त उपयोगिता} = \frac{\text{वस्तु X की सीमान्त उपयोगिता}}{\text{वस्तु X की कीमत}}$$

$$\text{अतः} \quad \frac{Mux}{Px} = \frac{Muy}{Py} = \frac{Mu_z}{Pz} = \frac{Mun}{Pn}$$

नियम का महत्व (Importance of Law)

स्म-सीमान्त उपयोगिता के नियम का अर्थशास्त्र में बहुत महत्व है। प्रो.मार्शल के शब्दों में, ''प्रतिस्थापन का नियम अर्थशास्त्र के लगभग सभी क्षेत्रों पर लागू होता है।

- उपभोग में महत्व (Importance in Consumption)
- उत्पादन के क्षेत्र में महत्व (Importance in Production)
- वितरण में महत्व (Importance in Distribution)
- विनिमय क्षेत्र में महत्व (Importance in Exchange)
- राजस्व में महत्व (Importance in Public Finance)
- आय बचत एवं उपभोग में बंटवारा (Allocation of Income Between Savings And Consumption)
- विदेशी व्यापार में महत्व (Importance in Foreign Trade)
- परिसम्पतियों का वितरण (Distribution of Assets)

- **सम–सीमान्त तुष्टिगुण के नियम की आलोचना (Criticism of the Law of Equi-Marginal Utility)**

- उपभोक्ता पूर्णतया विवेकशील नहीं है। (Consumer is not Completely Rational)
- उपभोक्ता का अज्ञान (Ignoreance of the Consumer)
- पदार्थों की अविभाज्यता (Individuality of Goods)
- उपयोगिता का माप सम्भव नहीं है (Utility is not measurable)
- फैशन, रीति–रिवाजों तथा आदत का प्रभाव (Influence of fashion, customs and habits)
- कीमतों में परिवर्तन (Change in Prices)
- मुद्रा का सीमानत उपयोगिता में परिवर्तन (Change in marginal utility of Money)
- निश्चित समय अवधि नहीं (No Fixed period)
- वस्तुओं की कमी (Shortage of goods)
- पूरक वस्तुएं (Complementary Goods)
- अनिश्चित बजट अवधि (Indefinite budget period)

धन्यवाद